LUCKNOW, TUESDAY APRIL 24, 2018; PAGES 16 ₹3

the pioneer

IQAC seminar held by SMS, Varanasi

Pioneer

Seminar on growth prospects of higher educational institutions

PIONEER NEWS SERVICE ■ VARANASI

The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of School of Management Sciences (SMS) Varanasi conducted two events over the weekend at its Khushipur campus. The first one was a seminar entitled 'Growth Prospects of Higher Educational Institutions under NAAC' addressed by the IQAC Coordinator of the affiliating University-Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, (MGKV) and Prof Kripa Shanker Jaiswal (Director-Institute of Management Studies, MGKVP).

Welcoming the guest, the chairperson of IQAC (SMS), Prof PN Jha (Director) said that after the Institution earned the A-grade in NAAC last year, the newer parameters defined by the accreditation institution the activities further streamlined in order to retain the growth which SMS has witnessed during the decade gone by. The IQAC Coordinator (SMS) Prof Alok Kumar (Dean R&D) emphasised on the ever-changing needs of higher education and acclimatising to it quickly so as to continue on growth path. He said that recent changes in NAAC processes involving bringing of more objectivity (to the extent of 70 per cent) and that too under digital platform speaks of the direction in which HEIs need to go! He added that the VUCA (Volatile, Uncertain, Complex, Ambiguous) environment thrown open to us has escalated the mental agility of the higher education professionals and we must be ready for many more changes in the coming years, he added.

The Resource person Prof that in a country like India, first educational infrastructure needs to be developed, then only accreditation compliance can be effective and fruitful. NAAC needs to show some flexibility too apart from objectivity in processing the accreditation applications. Moreover, all different accreditation and ranking mechanisms (including NIRF of MHRD) should be unified, he was referring to the fact that higher ranked institutions in NIRF did not fair that good under NAAC and also the vice-versa (exceptions apart). Online evaluation could be a serious challenge to all stake holders, he added. He also laid stress on the different parameters like alumni benefit, linkage to foreign universities, more academic excellence through different related pursuits, community service and innovative and sustainable practices etc tation results. He assured all possible help to the IQAC of the Institution. The programme was conducted by Dr Anchal Pathak.

In yet another event, a workshop was organised for the library staff of SMS and Lucknow entitled 'Digital Libraries: Conceptualisation to Implementation' featuring Resource persons Dr AdityaTripathi (HOD-Lib and Inf Sc, BHU) and Dr Sneha Tripathi (CL, BHU) who trained the incumbents on Green Stone and D-Space (Digital Library platforms) which the institution is going to implement from the forthcoming session. On the occasion, the Library Coordinator of SMS Varanasi, Prof Alok Kumar along with the librarians of Varanasi and Lucknow campuses, Pratima Bhargava and Shamit Srivastava were

दैनिक जागरण

मंगलवार, 24 अप्रैल, 2018

निष्पक्षता लाना सराहनीय कार्य

जासं, वाराणसी : स्कूल आफ मैनेजमेंट सांइसेज (एसएमएस) में 'ग्रोथ प्रास्पेक्टस आफ हाइयर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स अंडर नैक' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। आइक्यूएसी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के समन्वयक प्रो. कृपाशंकर जायसवाल ने कहा कि निष्पक्षता लाना सराहनीय कार्य है लेकिन नैक को यह भी देखना चाहिए कि देश की सभी संस्थाएं समान नहीं है। संस्थान के आइक्यूएसी अध्यक्ष एवं निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि एकजुट होकर नैक के संकेतकों को ध्यान में रखकर कार्य करें। प्रो. आलोक कुमार ने कहा कि मूल्यांकन मापदंडों में कभी भी परिवर्तन आ सकते हैं। कार्यक्रम में संजय गुप्ता, डा. आदित्य त्रिपाठी, डा. स्नेहा त्रिपाठी आदि मौजूद रही।

हिन्दुस्तान
मंगलवार, 24 अप्रैल 2018, वाराणसी,

काशी विद्यापीठ के प्रो. केएस जायसवाल को स्मृतिचिह्न प्रदान करते प्रो. पीएन झा।

आनलाइन मूल्यांकन की चुनौतियां बताईं

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट सांइसेज (एसएमएस) में आईक्यूएसी (इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल) की ओर से सोमवार को कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में काशी विद्यापीठ में आईक्यूएसी सेल के समन्वयक प्रो. केएस जायसवाल ने आनलाइन मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आनलाइन मूल्यांकन में चुनौतियां बहुत हैं। निदेशक प्रो. पीएन झा ने नैक के गुणवत्ता सम्बन्धी 32 संकेतकों की जानकारी दी। एक अन्य कार्यशाला में डिजिटल पुस्तकालय पर बीएचयू के डॉ. अदित्य त्रिपाठी व डॉ. स्नेहा त्रिपाठी ने प्रशिक्षण दिया। समन्वयक प्रो. आलोक कुमार ने संचालन किया।

inext
दैनिक जागरण
Varanasi, 24 April 2018

चुनौतियों पर फोकस जरूरी: प्रो.कृपाशंकर

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में सेमिनार का हुआ आयोजन

VARANASI (23 April): स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज वाराणसी के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ आईक्यूसी की ओर से सोमवार को सेमिनार व वर्कशॉप का आयोजन हुआ. 'ग्रोथ प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस अंडर नैक' विषयक सेमिनार में मुख्य वक्ता काशी विद्यापीठ के आईक्यूएसी समन्वयक व निदेशक आईएमएस प्रो. कृपा शंकर जायसवाल ने संस्थागत विभिन्न महत्वपूर्ण आयामों का उल्लेख किया. आशा व्यक्त की कि 70 परसेंट ऑनलाइन मूल्यांकन के दोनों पहलुओं को समझने की आवश्यकता है. निष्पक्षता लाना सराहनीय कार्य है लेकिन नैक को यह भी देखना चाहिए कि हमारे देशव्यापी संस्थान समान नहीं हैं, न तो हर एरिया में आधारभूत सुविधाएं मौजूद हैं, ऐसे में चुनौतियां बहुत हैं. संस्थान के आईक्यूएसी अध्यक्ष व निदेशक प्रो. पीएन झा व आईक्यूएसी समन्वयक प्रो. आलोक कुमार ने विचार व्यक्त किये. इस मौके पर डिजिटल लाइब्रेरी के लिए ग्रीन-स्टोन व डी-स्पेस पर डॉ. आदित्य त्रिपाठी व डॉ. स्नेहा त्रिपाठी बीएचयू ने ट्रेनिंग दी.

SMART
हिन्दुस्तान
मंगलवार, 24 अप्रैल 2018, वाराणसी

काशी विद्यापीठ के प्रो. केएस जायसवाल को स्मृतिचिह्न प्रदान करते प्रो. पीएन झा।

ऑनलाइन मूल्यांकन की चुनौतियां बताईं

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट सांइसेज (एसएमएस) में आईक्यूएसी (इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल) की ओर से सोमवार को कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में काशी विद्यापीठ में आईक्यूएसी सेल के समन्वयक प्रो. केएस जायसवाल ने आनलाइन मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आनलाइन मूल्यांकन में चुनौतियां बहुत हैं। निदेशक प्रो. पीएन झा ने नैक के गुणवत्ता सम्बन्धी 32 संकेतकों की जानकारी दी। एक अन्य कार्यशाला में डिजिटल पुस्तकालय पर बीएचयू के डॉ. अदित्य त्रिपाठी व डॉ. स्नेहा त्रिपाठी ने प्रशिक्षण दिया। समन्वयक प्रो. आलोक कुमार ने संचालन किया।